

PROF. BRIJESH KUMAR SHUKLA

Prof. Brijesh Kumar Shukla, a distinguished scholar of Sanskrit and eminent teacher in the University of Lucknow, has worked tirelessly and effectively in popularizing Sanskrit as a Language, and also as an effective medium for research into our history and culture. Prof. Shukla is fluent in Sanskrit as evident from his prolific output of Poems, Stories and the Editing of unpublished Manuscripts. He is well versed in the modern analytical approach as well as the traditional methods for study of Sanskrit. It is rare to find a person like him who has traversed the entire gamut of Sanskrit Studies-Literature, Vedas, Puranas, Jyotish, Philosophy and Rituals.

2. Born on October 1, 1962, Prof. Shukla received his B.A. Degree in 1982, M.A. Degree in 1984, Acharya in 1986, Ph.D. Degree (Sanskrit) in 1990, D.Litt. Degree (Sanskrit) in 2003 and D. Litt. Degree (Jyotirvijnana) in 2009 from the University of Lucknow, Lucknow. He was made Convener of the newly introduced subject of Jyotirvijnana by U.G.C. in 2001 and he became a professor of Sanskrit in 2004 at an early age. He was made the Head, Department of Sanskrit and Prakrit Languages in 2010 and the Director of Abhinavagupta Institute of Aesthetics and Shaiva Philosophy in Lucknow University, Lucknow.

3. Prof. Shukla's brilliant contributions have been recognized nationally and internationally both. He has published his original 24 books on the various disciplines of Sanskrit Literature as Madhya-Siddhant-Kaumudi, Kridant-Sutravali, Shri-Madbhargavopapuranam-Adhyayanam-Sampadancha, Alankara-Manjari, Uddamareshwara-Tantram, Shuka-Jatakam, Purana-Sahityadarshah, Dhvanigatha-Panjika, Shrutabodha, Karma-Kaumudi etc. He has also published his 80 research papers in the reputed journals and organized seven National Seminars on different disciplines of Sanskrit. He has completed three Research Projects successfully, sponsored by the Central and State Government. He was elected as E.C. member of All India Oriental Conference and Chairperson and Sectional President of various sections of the conferences.

4. Under the supervision of Prof. Shukla, 60 research scholars have been awarded Ph.D. Degree 20 Scholars have done M.Phil. Thesis and one Scholar has been awarded D.Litt degree. He has a great knowledge of Indian Observatory (Vedhashala). His creative writings have been recognized by the Universities and his poetries are prescribed in the undergraduate courses of the several Universities of Uttar Pradesh.

5. Prof. Shukla has been conferred the Sanskrit Sahitya Puraskar by Uttar Pradesh Sanskrit Sansthan in 1994, 1995, 1996, 2003 and 2014, Vyas Namit Puraskar in 1998, Pratap Narain Mishra Yuva Sanskrit Award in 1995, Vishesh Puraskar in 2006, 2007 and 2010, Vikram Kalidas Puraskar in 2011, Vishisht Puraskar in 2011 for original contributions to Sanskrit Literature and the Ram Krishna Sanskrit Award in 2001 by the Canadian World Educational Foundation. He has also been conferred Shikshak Shri in 2010 and Saraswati Samman in 2012 by the Higher Education Department of Uttar Pradesh Government as the Highest Award of U.P. He has received Km. Vimalapuri Gold Medal, Smt. Chandra Devi & Radha Krishna Arun Vanshi Gold Medal and Kalidas Gold Medal etc.

पद्म श्री

प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल



प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वान और लखनऊ विश्वविद्यालय में विख्यात शिक्षक हैं। आपने संस्कृत को एक भाषा के रूप में तथा हमारे इतिहास और अनुसंधान के लिए एक प्रभावी माध्यम के रूप में लोकप्रिय बनाने में अथक और कारगर रूप से कार्य किया है। आप संस्कृत में धारा प्रवाह हैं जैसा कि आपकी कविताओं, कहानियों तथा अप्रकाशित हस्तलिपियों के सम्पादन के समृद्ध संग्रह से स्पष्ट होता है। आप संस्कृत के अध्ययन के लिए आधुनिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण तथा पारंपरिक तरीकों में निपुण हैं। आप जैसे महापुरुष का मिल पाना दुर्लभ है जिन्होंने संस्कृत अध्ययन की संपूर्ण विधा यथा साहित्य, वेदों, पुराणों, ज्योतिषी विद्या, दर्शनशास्त्र तथा अनुष्ठानों पर महारत हासिल की है।

2. प्रो. शुक्ल का जन्म 01 अक्तूबर, 1962 को हुआ। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से 1982 में बी.ए. की डिग्री, 1984 में एम.ए. की डिग्री, 1986 में आचार्य की डिग्री, 1990 में पीएच.डी. (संस्कृत), वर्ष 2003 में डि.लिट. (संस्कृत) तथा वर्ष 2009 में डि.लिट. की डिग्री (ज्योतिर्विज्ञान) में प्राप्त की। आपको वर्ष 2001 में यू.जी.सी. द्वारा शुरू किए गए नए विषय ज्योतिर्विज्ञान का संयोजक बनाया गया और आप कम आयु में ही वर्ष 2004 में संस्कृत के प्रोफेसर बन गए। आपको वर्ष 2010 में संस्कृत और प्राकृत भाषा विभाग का अध्यक्ष बनाया गया तथा लखनऊ विश्वविद्यविद्यालय, लखनऊ में अभिनव गुप्ता इंस्टीच्यूट ऑफ अस्थैटिक्स एंड शैवा फिलोस्फी का निदेशक बनाया गया।

3. प्रो. शुक्ल के उत्कृष्ट योगदान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पहचान मिली है। आपने संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी मौलिक 24 पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिनमें मध्य-सिद्धांत-कौमुदी, कृदान्त-सूत्रावली, श्री मदभार्गवोपापुराणम्- अध्ययनम्-सम्पदांच, अलंकार-मंजरी, उदमरेश्वर-तंत्रम, शुक-जातकम्, पुराण-साहित्यदर्शन, ध्वनि गाथा-पंजिका, श्रुत बोध, कर्म-कौमुदी आदि प्रमुख है। आपने प्रतिष्ठित जनरलों में अपने 80 अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए हैं और संस्कृत की विभिन्न विधाओं पर 7 राष्टीय सेमिनार आयोजित किए हैं। आपने केन्द्रीय और राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित 3 अनुसंधान परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है। आपको ऑल इंडिया ऑरिएन्टल कांफ्रेंस का ई.सी. सदस्य तथा कांफ्रेंस के विभिन्न खंडों का अध्यक्ष और सेक्शनल प्रेजीडेंट चुना गया।

4. आपके मार्गदर्शन में 60 अनुसंधान विद्वानों को पीएच.डी. की डिग्री प्रदान की गई है, 20 विद्वानों ने एम.फिल. की है, एक विद्वान को डि.लिट. डिग्री प्रदान की गई है आपको भारतीय वेधशाला का अपार ज्ञान है। आपकी रचनात्मक कृतियों को विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्रदान की गई है तथा आपकी कविताएं उत्तर प्रदेश के कई विश्वविद्यालयों के स्नातक पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाती हैं।

5. आपको वर्ष 1994, 1995, 1996, 2003 तथा 2014 में उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा संस्कृत साहित्य पुरस्कार, वर्ष 1998 में व्यास नामित पुरस्कार, वर्ष 1995 में प्रताप नारायण मिश्र युवा संस्कृत पुरस्कार, वर्ष 2006, 2007 और 2010 में विशेष पुरस्कार, 2011 में विक्रम कालिदास पुरस्कार, वर्ष 2011 में संस्कृत साहित्य में मौलिक योगदान के लिए विशिष्ट पुरस्कार तथा वर्ष 2001 में कनाडियन वर्ल्ड एजुकेशनल फाउंडेशन द्वारा राम-कृष्ण संस्कृत पुरस्कार से नवाजा गया है। उत्तर प्रदेश सरकार के उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च पुरस्कार के रूप में आपको वर्ष 2010 में शिक्षक श्री तथा वर्ष 2012 में सरस्वती सम्मान प्रदान किया गया है। आपको कु. विमलापुरी गोल्ड मेडल, श्रीमती चन्द्र देवी और राधाकृष्ण अरुण वंशी गोल्ड मेडल तथा कालिदास गोल्ड मेडल आदि भी प्राप्त हुए हैं।